ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—14/10/2020

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

3. **करण कारक:**

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं;

जैसे -चाबी से ताला खोलिए।

अपने मुँह से कुछ तो बोलिए।

4**. संप्रदान कारक:**
~~~~~~~~~~

प्रदान करना अर्थात् देना और 'संप्रदान' अर्थात् 'विशेष रूप से कुछ देना। जहाँ किसी के लिए कुछ किया जाए किसी को कुछ दिया जाए, वहाँ संप्रदान कारक होता है; जैसे-

दादा जी <u>के लिए</u> चाय लेकर जाओ।

सुभद्रा ने <u>निर्धनों को</u> भोजन दिया।

(इन वाक्यों से कर्ता द्वारा किसी के लिए कुछ करने अथवा किसी को कुछ देने का भाव प्रकट हो रहा है। अतः इन वाक्यों में संप्रदान कारक है।)

<u>कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर</u>

कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों का ही कारक-चिह्न 'को' होता है। पर दोनों में 'को' का प्रयोग अलग-अलग अर्थ में होता है।कर्म कारक में क्रिया के व्यापार का फल 'कर्म' पर पड़ता है, जबकि संप्रदान कारक में 'को का प्रयोग' कुछ देने के अर्थ में किया जा**<u>ता है, जैसे</u> राजीव ने रंजन को बुलाया।** इस वाक्य में 'बुलाया' क्रिया का फल 'रंजन' पर पड़ रहा है। अतः यहाँ कर्म कारक है। राजीव ने रंजन को प्रसाद दिया। इस वाक्य में 'को' का प्रयोग देने के अर्थ में हुआ है। इसलिए यहाँ संप्रदान कारक है।

<u>5.अपादान कारक</u> :

जहाँ संज्ञा या सर्वनाम के किसी रूप से उसके किसी से अलग होने या तुलना, डरने, सीखने, घृणा, दूरी, स्रोत, उत्पत्ति कार्य प्रारंभ होने, लजाने आदि का भाव प्रकट होता है, वहाँ अपादान कारक होता है; जैसे-

स्टेशन से गाड़ी चली।

संजना कॉकरोच से डरती है।

मुझे झूठ से घृणा है।

गंगा हिमालय से निकलती है।

मंदिर में कल से कथा आरंभ होगी।

पेड़ से पत्ता गिरा।

गीतिका सरोज से नृत्य सीखती है।

नदी गाँव से थोड़ी दूर है।

कुम्हार मिट्टी से बर्तन बनाता है।

नववधू लोगों से लजाती है।

छात्र कार्य

दी गई पाठ्य सामग्री को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए एवं याद करें।

कुमारी पिंकी"कुसुम"